International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 7 Issue 06 Ver. I ||Jun. 2018 || PP.84-86

जैन एवं अन्य धर्मो में वैराग्य पक्ष

शोध निदेशक
सुकदेव वाजपेयी

शोधार्थी
कीर्ति जैन
संस्कृत विभाग
स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर

सारांश

हिन्दु, जैन, बौद्ध, वेदांत आदि अनेक धर्मो में वैराग्य विषय की समानतायें देखने को सहज ही मिलती है जैसे राजा दशरथ को अपने सफेद बाल देखकर वैराग्य हो गया था और वे दीक्षा के पूर्व राम को राज्य देना चाहते थे, किन्तु होनी को कुछ और ही मंजूर था ।

इसी प्रकार बौद्ध दर्शन में वैराग्य के लिए सड़ी हुई मृत देह का चिंतन करने की बात कही है। वह कहा गया है कि मृत शरीर जब सड़कर बहुत नीला हो जाये और उसमें बहुत से कीड़े पड़ जाये तो उन्हे देखकर और उसका विचार कर वैराग्य उत्पादित करना चाहिए । यद्यपि यह तरीका जैन धर्म के अनुसार ही है । तदापि यहां विकृति को मुख्य रूप से साधक बनाया गया है ।

वेदांत और संख्या आदि वैदिक दर्शनों में भी संसार का स्वरूप शरीर की मलीनता और भोगों की आसरता चिंतन करने पर वैराग्य की प्राप्ति बताई गई है । यहां बहुत कुछ जैन धर्म के साथ समानता देखी जा सकती है असमानता तो नाममात्र की है और यह कभी कभी तापस अनेक प्रकार की तामसिक साधना करके अथवा स्वयं को कष्ट पहुंचाकर वैराग्य की अनुमोदना करते है ।

वैराग्य को अंतरंग से उत्पन्न होना चाहिए न कि बाहर से स्त्री, पुत्र आदि का त्याग करने से यह वैराग्य हो सकता है, क्योकि यह तो एक प्रकार से उदासीनता है जिसे भूलवश वैराग्य समझ लिया जाता है। यहां ध्यातव्य है वास्तविक आंतरिक वैराग्य की उत्पत्ति हेतु अनित्य, अशरण आदि 12 भावनाओं का चिंतन अवश्य करना चाहिए। ये भावनायें अंतरंग से कषायों को मन्दता लाते हुए वास्तविक वैराग्य को जन्म देती है ।

मुख्य शब्द

1. वैराग्य
2. वीतरागी
3. अनेकांतवाद
4. स्यादवाद

शोध उद्देश्य

जैन धर्म से संबंधित शोध जगत में विगत अर्थ शताब्दि में व्यापक परिवर्तन हुये है न केवल भारतीय शोधार्थी अपितु विदेशी शोधार्थियों ने भी इस क्षेत्र में अपनी रूचि दिखलाई है। जैन धर्म एवं जैन साहित्य व जैन मुनि परंपरा का इतिहास बहुत पुराना है । लगभग 4500 वर्ष पुराना यह धर्म अहिंसा, सत्य, संयम, चोरी न करना एवं वैराग्य आदि की शिक्षा देता है। ये इस धर्म को पांच महान प्रतिज्ञायें कहलाती है। जैन धर्म वीत–राग पर आधारित धर्म है जो कि सही धारणा सही ज्ञान एवं सही आचरण के माध्यम से जन्म मृत्यु एवं पुनर्जन्म के चक्र को तोड़कर मोक्ष को प्राप्त करने के विषय को बतलाता है । वर्तमान में न कोवल भारत वर्ष अपितु विदेशों में भी जैन धर्मावलांबियों की बड़ी संख्या है जो इसे और भी समृद्ध कर रही है ।

शोध पद्धति

परिकल्पना अर्थात पूर्व चिंतन। किसी भी कार्य को करने से पूर्व हम मस्तिष्क में विचार करते है और यह विचार ही एक प्रकार की कल्पना है। शोध कार्य परिकल्पना के निर्माण एवं उसके परीक्षण के माध्यम से प्रक्रिया है। इसके अलावा परिकल्पना को संभावित समाधान भी कहा जाता है। यहां पर पूर्व कथन को अस्थाई रूप से सही इस प्रकार परिकल्पना का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार परिकल्पना एक विचार दशा या सिद्धांत होती है जो संभवतः बिना किसी विश्वास के स्वीकार कर ली जाती है जिससे कि उनके तार्किक परिणाम निकाले जा सकें तथा तथ्यों को प्रस्तुत शोध निम्न परिकल्पनाओं पर आधारित है ।

1. आधुनिक काल में जैन धर्म एवं जैन ग्रन्थों के अध्ययन एवं चिंतन कार्य में व्यापक प्रगति हुई है ।
2. जैन धर्म के प्राचीन ग्रन्थों की पुरानी पाण्डुलिपियों को सुरक्षित एवं संरक्षित करने का कार्य किया गया है ताकि शोधार्थी एवं जिज्ञासुजन उनका लाभ ले सकें ।
3. जैन धर्म ग्रन्थों पर शोध करने वाले शोधार्थियों द्वारा बारस अणु वेक्खा पर शोध कार्य तो किये गये है किन्तु इसका दार्शनिक पक्ष अभी सामने आना प्रतिक्षारत है ।

4. जैन धर्म के प्राचीन ग्रन्थों पर अभी शोधकार्य एवं शोध प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है ।
5. जैन ग्रन्थों पर शोधकार्य करने वाले शोधार्थियों का प्रोत्साहन एवं ऐसे संस्थान स्थापित करने की आवश्यकता है जहां शोध सामग्री सहज रूप से उपलब्ध हो सकें ।

विश्लेषण

चार्वाक दर्शन को वैराग्य को कुछ खास स्थान तो नहीं देता, उनका कहना है कि जो कुछ प्रत्यक्ष दिखाई देता है वही भोग्य है और परोक्ष स्वर्ग मोक्ष के लिए अपना वर्तमान सुख नष्ट करना उचित नहीं है ।

ईसाइ धर्म में वैराग्य को उतना महत्व नहीं दिया गया है जितना की अन्य धर्मो में दिया जाता हैं ईसाई धर्म के अनुसार विवाह को आवश्यक बताया गया है । वहा ब्रम्हचर्य की महिमा नहीं है। यदि कोई अविवाहित रहता है तो वह सामाजिक अपराधों का कारण बनता है । अतः विवाह करके गृहसथ जीवन जीने पर यह धर्म बल देता है । अतः वैराग्य की पराकाष्ठा के दर्शन यहा नहीं होते ।

जहां एक और ईसाई धर्म में वैराग्य को इतना महत्व नहीं है वही दूसरी ओर वेदिक धर्म में वैराग्य की प्राप्ति को अनिवार्य बताया गया है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में सन्यास और वानप्रस्थ आश्रम के अनुसार जीवन जीने की शिक्षा दी गई है । यहां विचारणीय है कि वैराग्य को बलात् उत्पादित नहीं किया जा सकता । यह अंतरंग मसे स्वयमेव उत्पन्न होना चाहिए। यदि हम बहिरंग परिग्रहादि से कुछ त्यागकर बलात् वैराागी बनने का प्रयास करेगें तो शायद यह वैराग्य वास्तविक नहीं होगा और कालांतर में पुनः राग में परिवर्तित होने की संभावना बनी रहेगी ।

एक खास बात यह है कि परिस्थिति जन्य वैराग्य को वास्तविक वैराग्य नहीं कहते वह तो एक प्रकार की उदासीनता है जो कि परिस्थितियों के समाप्त होने पर पुनः राग में परिवर्तित हो जाती है। अतः वैराग्य और उदासीनता में बहुत बड़ा अंतर है जिसे आ सानी से समझना कठिन है । वैराग्य के लिए आंतरिक कषायों की मंदता और भूमिका अनुसार परिग्रहादि का भी त्याग आवश्यक है। दरसल जैन धर्म में बाह्य वस्तुओं को परिग्रह संज्ञा नहीं है। अपितु उनके प्रति ममत्व एवं मोह भाव को ही परिग्रह कहा गया है। वस्तु तो कभी जीव ने ग्रहण ही नही की तो उसे छोड़ने की क्या बात है ।

इस प्रकार यह विश्व के प्रमुख धर्म और दर्शनों में वैराग्य की प्रकृति और इसके कारणों का संक्षिप्त विवेचन किया गया है साथ ही उन सब की जैन धर्म के साथ समानतायें और असमानतायें प्रदर्शित की गई है ।

निष्कर्ष

प्राचीन काल के विभिन्न दर्शनों में मूलभूत अंतर क्या है इस बता की खोज की जाती थी और उसकी प्रमाणिकता पर पूरी गंभीरता से विचार किया जाता था पर आाजकल विभिन्न दर्शनों में क्या अंतर है इसी चर्चा न करके उनमें क्या समानता है यह खोजा जाने लगा है। क्योकि मानस यह बन गया है कि विभिन्न दर्शनों में अंतर है इसकी चर्चा करने से देश व समाज की एकता खंडित होती है उन दर्शनों में से किसकी कितनी बात तर्क की कसौटी पर खरी उतरती है और कितनी नहीं इसकी चर्चा मात्र से वातावरण विषक्त हो जाता है ।

यद्यपि यह सत्य है कि अंतर की अथवा विरोध की चर्चा मात्र से वातावरण विशुद्ध हो जाता है। तदापि विक्षुब्ता का मुल कारण सहिष्णुता का अभाव है दार्शनिक चर्चा नहीं । अतः समाज को सहिष्णु बनाने का प्रयास होना चाहिए। सभी समाज है ऐसा कहने से तो विभिन्न दर्शनों की पहचान ही समाप्त हो जायेगी। यह किसी देश या समाज के गौरव की बात नहीं है। इसमें सत्य की खोज का रास्ता ही बंद हो जाने का खतरा है ।

1. जैन दर्शन अकर्तावादी दर्शन है उसके अनुसार कोई भी द्रव्य किसी भी अन्य द्रव्य की परिणिति का कर्ताधर्ता नहीं है। इसके विपरीत एक द्रव्य को ही अन्य द्रव्य का कर्ता बताया गया है ।
2. अनेकांतवाद एवं स्याद्वाद दर्शन इस दर्शन की प्रमुख विशेषता है जो अन्य दर्शन में देखने को नहीं मिलती है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पंडित टोडरमल, मोक्षमार्ग प्रकाशक, पृष्ठ 139 से 143 137 पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर
2. जैनधर्मः एक झलक, डॉ. अनेकांत जैन, आचार्य शांतिसागर छाणी ग्रन्थमाला, मेरठ भूमिका
3. पं. दौलतराम जी, छहढ़ला, पंम ढाल छन्द –1
4. समयसार कलशा, आचार्य अमृत चंद, संस्कृत टीका आत्मख्याति, कलश स ंख्या 136
5. मूर्च्छा परिग्रहः तत्वार्थसूत्र आचार्य उमास्वामी, अध्याय –9 सूत्र